

häufig am Anf. eines comp.: अन्तर्वाप्य innere Thränen (Çāk. 81, v. 1.), oder im Innern Thränen bergend (Vikr. 78.), अन्तर्लौघ die im Innern (enthaltene) Wassermenge Megh. 61. अन्तःपुद्ग innerlich rein 50. अन्तर्म-
दावस्थ im Innern im Zustande der Wuth Ragh. 2, 7. Vgl. auch इ, गम्,
धा, यम्, ली, कृन् u. s. w. mit अन्तर. — 2) praep. a) mit folg. oder vorang.
loc. innerhalb, in; zwischen; in — hinein: कदा अन्तर्त्तर्वरूपे भुवानि
RV. 7, 86, 2. त्रीणि व्रता विद्वे अन्तरेषाम् 2, 27, 8. अन्तः सिन्धौ AV. 6, 1, 2.
5, 11, 8. RV. 1, 23, 19. 7, 11, 3. VS. 12, 15. 39. 32, 4. सो ऽयं पुरुषे उत्तः प्र-
विष्टः Çat.Br. 1, 1, 3, 2. 14, 8, 10, 1. (= Brh. Âr. Up. 5, 9, 1.) हिरण्मय्योर्ह
कुशोरत्तरवक्ति अस् 3, 6, 2, 9. अन्तरादित्ये Khand. Up. 1, 6, 6. अन्तः श-
रिरे Mund. Up. 3, 1, 5. अन्तर्हृदये Çat. Br. 14, 5, 4, 17. (= Brh. Âr. Up.
2, 1, 17.) 6, 11, 3. (= 4, 2, 3.) Khand. Up. 8, 1, 3. अन्तरात्मन् Çat. Br. 4,
1, 2, 2. 14, 5, 3, 6. 8. (= Brh. Âr. Up. 2, 3, 4. 5.) Kathop. 4, 1. आये ऽन्तः
Çat. Br. 14, 4, 1, 9. = Brh. Âr. Up. 1, 3, 8. दक्षो ऽस्मिन्नराकाशस्तिस्मि-
न्यदन्तस्तद्वेष्टव्यम् Khand. Up. 8, 1, 1, 2. उभे ऽस्मिन्वावापृथिवी अन्तरेव
समाहिते 3. अन्तर्वैश्वानि M. 7, 223. 8, 69. अन्तर्निवेशने 7, 62. R. 6, 112, 9.
अन्तः पृथिव्यां सलिले दृश्यसे त्वं महेरगः 102, 23. अन्तर्जले R. 1, 40, 13. 5,
7, 39. 47. Jâgñ. 3, 302. Pânât. 253, 18. H. 1078. अन्तर्भूमौ in der Erde
Añg. 9, 17. in die Erde 10, 27. अन्तर्दक्षिण Pânât. 1, 37. नीतस्तमस्यतः
Kathis. 4, 57. Verstärkt mit आ (vgl. अग्निः) पते पवित्रमर्चिष्यमे वितत-
मन्तरा RV. 9, 67, 23. त्री ष पवित्रा हृष्यन्तरा दधे 73, 8. Vgl. अन्तरा. In
dieser Verbindung mit dem loc. ist अन्तर streng genommen noch adv.,
das als nähere Bestimmung des vieldeutigen loc. auftritt. Vgl. die genau
entsprechende Construction: अविद्यायामन्तरे (in der Unwissenheit, im
Innern, d. i. in der tiefsten Unwissenheit) वर्तमानाः Mund. Up. 1, 2, 8.
Kathop. 2, 5. — b) mit folg. acc. zwischen: अन्तर्मही वृक्षो रोदसीमे
RV. 7, 87, 2. अन्तर्देवान्मर्त्यैश्च 8, 2, 4. मात स्तुर्वी श्रोतयः 10, 87, 1. 3, 38,
3. VS. 7, 5. SV. II, 5, 1, 4, 7. — c) mit folg. oder vorang. gen. in, inner-
halb: कूपस्यात्तश्चन्द्रमसो रश्मिन्पश्यन् Itih. bei Sâj. zu RV. 1, 103. त-
दन्तरस्य सर्वस्य तद्व सर्वस्यास्य वाक्यतः VS. 40, 5. = Icop. 3. बहिर-
तश्च भूतानाम् Bhag. 13, 15. चन्द्रमाः सर्वभूतानामन्तश्चरति सान्तिवत् N. 24,
29. अन्तश्चरति भूतानां सर्वेषां किल मारुत R. 1, 34, 18. त्वमग्रे सर्वभूताना-
मन्तश्चरति सान्तिवत् Jâgñ. 2, 104. अन्तरीपं यदन्तर्वरिणास्तदन् AK. 1, 2, 2, 8.
यस्य अन्तःस्थानि (comp.!) भूतानि Bhag. 8, 22. in der Mitte: लस्तको
ऽस्यातः (धनुषः) H. 773. — d) am Ende eines comp. in (auf die Fragen
wo, wohin und wann): अन्मोऽन्तः im Wasser Jâgñ. 1, 149. तदन्तः — ऐतत
Vid. 144. मध्ये विन्ध्यातः Kathis. 4, 1. जरातर्गिरिः (im Alter) पत्रे R.
3, 22, 25. समातः सान्तिणः प्राप्तान् M. 8, 79. कृपातः पतितः Pânât. 222, 2.
नृपं प्रवेशयामास मठातः Vid. 44. mitten in: हारातर्गिणीः H. 650. zwischen:
दन्तातरार्धिष्ठितम् M. 3, 141. सप्तर्षिनागवीध्यतः Jâgñ. 3, 187. वृत्तातरा-
लोकितया ज्योत्स्नया Sâv. 3, 106. चतुरष्टशतग्रामातः Trik. 2, 2, 4. कूर्पर-
मातः H. 591. तर्जन्यङ्गुष्ठातः 840. क्रियातः Vop. 3, 34. aus dem Innern
heraus: उत्पित्सवो ऽन्तर्नर्तुः (= समुद्रस्यान्तरभ्यन्तरात्) Çic. 3, 77. Ein
solches comp. verbindet sich mit einem adj. verb. zu einem neuen
comp.: घटातर्त्तर्भिः सक्तुभिः Pânât. 253, 2. अहं सदा शरीरातर्त्तर्वासनी
ते सरस्वती Kathis. 4, 11. भूतानाम् — सर्वातश्चारिणाम् 3, 25. कर्प्रत्याह-
रातःस्ये वर्षे P. 3, 3, 8, Sch. — e) nicht selten verbindet sich अन्तर in
mit dem regierten Worte zu einem comp. in der Bedeutung: das In-

nerer, der Zwischenraum von (vgl. अन्तःकाशि, अन्तरागार, अन्तरदशाद u. s. w.), oder: im Innern von — befindlich (vgl. अन्तरग्नि), oder endlich als adv. (vgl. P. 4, 3, 60.): im Innern von (vgl. अन्तःपादम्, अन्तर्गन्तु). Ein solches adv. comp. verliert als erstes Glied eines neuen comp. das Flexionszeichen: अन्तर्गलचर im Wasser gehend R. 4, 40, 31. अन्तःसलिलस्य im Wasser stehend PAṆĀT. 257, 3. अन्तर्गलमुत्त VID. 242. अन्तर्भूमिगत in die Erde gegangen ARĀ. 9, 8. SUND. 2, 8. अन्तर्गलगत PAṆĀT. 263, 10. अन्तर्भवनपतित MEGB. 79. — Die indischen Lexicographen führen 3 Bedeutungen von अन्तर an: 1) मध्ये H. 1338. an. 7, 42 (अन्तरं). MED. avj. 70. VIṢVA im ÇKDR. — 2) प्राप्ते VIṢVA. — 3) स्वीकारे H. an. MED. VIṢVA. — Vielleicht in etym. Zusammenhange mit अन्त (vgl. die 14te Bed.); vgl. auch अन्तर, अन्तरा, अन्तरेण.

अन्तर (von अन्तर) wird mit einem loc. componit gaṇa शैएडादि. 1)
adj. f. आ gaṇa सर्वादि; Declin. P. 1, 1, 36. 7, 1, 76. Vor. 3, 9. 12. 37. — a)
im Innern befindlich, der innere (Gegens. बाह्यः): नि हि षत्सदन्तरः पू-
र्वं अन्तर् RV. 10, 53, 1. इदं वचः पर्याय्य स्वरजिं हृदो अन्तर् तज्जि-
वत् 7, 101, 5. इन्द्र स्तोममिमं मम कृषा युतश्चिदन्तरम् nimm mein Lob in
dich auf 1, 10, 9. ब्रह्माहमन्तरं कृषवे AV. 7, 100. RV. 10, 82, 7. 91, 13. य-
दन्तरं तद्ब्रह्म AV. 2, 30, 4. न बाह्यं किं च न वेद नातरमेवायं पुरुषः CAT.
Br. 14, 7, 1, 21. (= BRH. ÂR. Up. 4, 3, 21.) य इमं च लोकं परं च लोकं सर्वा-
णि च भूतानि यो ऽन्तरो यमयति (vgl. अन्तर्यामिन्) 6, 3, 3. fgg. (= BRH. ÂR.
Up. 3, 7, 1. fgg.) 6, 6, 2, 16. 7, 1, 1, 16. 2, 4, 30. KÂTJ. ÇR. 16, 4, 31. अन्तर
आत्मा (Gegens. शारीरं आ) TAITT. Up. 2, 3, 4. यदा ह्येवैष एतस्मिन्नुदरम-
न्तरं कुरुते 7. कश्चान्तरो धर्मः SÂH. D. 62, 19. अन्तरे oder अन्तराः शाटकाः
KÂÇ. zu P. 1, 1, 36. (Dies ist das अन्तरमुपसंख्यन्ति oder परिधाने P. 1, 1, 36.
AK. 3, 4, 189. H. an. 3, 515. MED. r. 107. Vgl. अन्तरीयः). — b) nahe ste-
hend, nahe angehörend, sehr befreundet (Gegens. परः) न यत्परो नातरं
आदर्शद्विषयवत् । दुःशंसो मर्त्या रिपुः ॥ RV. 2, 41, 8. यो नः सन्तुष्यो अभि-
दामिदमे यो अन्तरो मित्रमहो वनुष्यात् 6, 3, 4. 13, 3. 62, 10. 63, 2. पायुरन्तरः
1, 31, 13. पुरोहितः 44, 12. 104, 6. तेतदत्रेयः पुत्रात्रेयो वित्तात्रेयो ऽन्य-
स्मात्सर्वस्मादन्तरं यद्यमात्मा CAT. Br. 14, 4, 2, 19. (= BRH. ÂR. Up. 1,
4, 8.) = आत्मीय AK. 3, 4, 189. H. an. 3, 515. MED. r. 107. अयमत्यन्तरो मम
BHARATA zu AK. im ÇKDr. सुमेधसामन्तरस्मै Vor. 3, 37. Von Lauten und
Wörtern: स्थाने ऽन्तरतमः P. 1, 1, 50. कृकारस्य धकारो ऽन्तरतमः ÇKDr.
सर्वस्य पदस्य स्थाने शब्दतो ऽर्थतश्चान्तरतमे द्वे शब्दस्वद्वये भवतः P. 8, 1, 1,
Sch. — c) angrenzend, anliegend (?), mit dem abl.: अन्तरं वा उत्त्वं न-
रायुषो भवति तस्मादिषात्तरा (sc. मेखला) वाससो भवति CAT. Br. 3, 2, 1, 11.
कैशं वासः परिधापयति कैशं वा चाण्डातकमन्तरं दीनितवसनात् (SÂJ.:
तस्माद्बहिःप्रदेशे । अन्तरशब्दे बर्हिर्योगे वर्तिते; vgl. f.) 5, 2, 1, 8. KÂTJ. ÇR.
7, 3, 26. 14, 3, 4. — d) entfernt von (?): द्वयं शोकात्तरम् (ÇAÑK. = अशो-
कम्) BRH. ÂR. Up. 4, 3, 21. An der entspr. Stelle CAT. Br. 14, 7, 1, 22:
द्वयमशोकात्तरम् (Sch.: न विद्यते शोको ऽन्तरे मध्ये यस्य). — e) verschie-
den von, mit dem abl.: यः पृथिव्यां तिष्ठन्पृथिव्या अन्तरः (ÇAÑK. = अ-
भ्यन्तरः, mit dem abl.!) CAT. Br. 14, 6, 3, 7. (= BRH. ÂR. Up. 3, 7, 3.) यो
ऽप्सु तिष्ठन्नद्धो ऽन्तरः u. s. w. 8 — 31. (= BRH. ÂR. Up. 4 — 23.) आत्मा
स्वभावो ऽन्तरो ऽन्यो यस्य स आत्मात्तरः P. 6, 2, 166, Sch. der andere:
उदधेरन्तरं परं काङ्क्षमाणः R. 5, 36, 37. Vgl. अन्तर 2, m. — f) (auf der Grenze,
auf der Aussenseite befindlich), der äussere P. 1, 1, 36. AK. 3, 4, 189. H. an.